शोध - संक्षेपिका

"श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में अभिव्यक्त मानवता"

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

पी. एच. डी. (हिन्दी) शोधोपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रबंध का

सार - संक्षेप

-: शोधछात्रा :-

राजींदर कौर स. हरमीत सिंघ महाजन

-: शोध - निर्देशक :-

डॉ. आर. एम. जाधव

प्रधानाचार्य

पीपल्स कॉलेज, नांदेड.

- : अनुक्रम :-

- **प्रस्तावना**
- **प्रथम अध्याय** :- सिख धर्म का परिचय

  श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का स्वरुप
- **द्‌वितीय अध्याय** :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सामाजिक मूल्य
- **तृतीय अध्याय** :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अभिव्यक्त मानवता
- **चतुर्थ अध्याय** :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सांस्कृतिक मूल्य
- **पंचम अध्याय** :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भाषा एवं शिल्प
- **षष्ठम्‌ अध्याय** :- उपसंहार
- **संदर्भ ग्रंथ सूची**

प्रस्तावना

श्री गुरु ग्रंथ साहिब मध्ययुगीन साहित्य एवं समाज को दर्पण है। इस महान ग्रंथ में संम्पूर्ण भारत का १२ वीं शताब्दी से लेकर १७वीं शताब्दी का लग भग ५०० वर्षो का आध्यात्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक इतिहास रेखांकित हुआ है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रचनाकार गुरु अर्जुन देव जी ने इस महान ग्रन्थ के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं धर्म निरपेक्षता का एक जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ में आए हिंदू, मुस्लिम, मराठा आदि अन्य संस्कृतियों का परस्पर संयोग इस भाँति किया गया है जो सभी जाति, धर्म से परे केवल मात्र मानव तथा मानव कल्याण से ही जुड कर रह गई है। गुरु ग्रन्थ साहिब न केवल सिक्ख धर्म अथवा भारत की ही नहीं अपितु मानवमात्र की अमूल्य निधि है।

१४३० पृष्ठों की इस अमूल्य निधि में न केवल तत्कालीन धार्मिक प्रवृत्तियों का चित्रण हुआ है, बल्कि मानव मन की चित्तवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक ढंग से भी विश्लेषण प्रस्तुत हुआ है। इस ग्रन्थ के वाणीकार लोक जीवन और लोक संस्कृति से पूरी तरह जुड़े है।

प्रथम अध्याय :- सिख धर्म का परिचय

भारतीय संस्कृति की पहचान पुरातन काल से धर्म के आधार पर की गई है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार धर्म से जोडा जा सकता है मध्ययुगीन काल से शैव, वैष्णव, बौद्ध, जैन, नाथ आदि संप्रदायों के बीच सामान्य जन फँसा हुआ था। मध्ययुगीन काल में भारत में सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा हो रही थी। समाज का जन-सामान्य वर्ग विभिन्न प्रकार के अधार्मिक तथा विषय परिस्थितियों से जूझ रहा था। ऐसे में गुरु नानक देवजी, कबीरदासजी, पीपा, आदि कई संत कवियों ने समाज के इस उपेक्षित

वर्ग को अपने काव्य द्वारा अभिव्यक्त किया और केवल मात्र धर्म, जाति-पाति से उपर उठकर मानव मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी ने समाज में व्याप्त आडंबर, दिखावा, जाति-पाति में फॅसे जन-सामान्य को मानवता का मार्ग दिखाया। तत्पश्चात् उनके परवर्ती नौ गुरुओं ने भी उन्हीं के मार्ग पर चलते मानवता का मार्ग प्रशस्त किया। सिखों के दसवें गुरु गुरु गोंबिद सिंह जी ने धर्म ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु की उपाधि दी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का परिचय, स्वरूप :-

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ३६ महापुरुषों की वाणी सुशोभित है, जो भारत के अलग-अलग क्षेत्रों जाति, वर्णो के थे। जो भारत के १२ वीं सदी से १७वीं सदी तक भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से संबंधित थे। उन्होंने निःस्वार्थ भावना से समूची मानवता को आध्यात्मिक एकता और भाईचारे का संदेश दिया।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ५८७२ शबद हैं जो ३१ रागों में रचित है। ३६ संत, भट, सिक्ख गुरुओं, भक्तों की वाणी इसमें संकलित की गई है। गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित वाणी को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है।

१. गुरुवाणी

२. भक्तवाणी

३. भट्टवाणी

१. गुरुवाणी :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ६ गुरुओं की वाणी संकलित हुई है, जिनके नाम इस प्रकार हैं - गुरु नानक देव जी, गुरु अंगद जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुन देव जी तथा गुरु तेगबहादर जी।

२. भक्तवाणी :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में १९ भक्त कवियों की वाणी संकलित हुई है - शेख फरीद, जैदेव, त्रिलोचन, नामदेव, सदना, वेनी, रामानंद, रैदास, कबीर, पीपा, सेन, धन्ना, भीखन, परमानंद, सूरदास, बाबा सुंदर, मरदाना, सत्ता और रायबलवंड जी।

३. भट्टवाणी :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ११ भट्ट कवियों की रचनाएँ संकलित हैं - कल्ह सहार, जाल्प, कोरत, भिक्खा, सल्ल, भल्ल, लन, गयंद, मथुरा, बल और हरबंस। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में १२ वीं शताब्दी से लेकर १७ वीं शताब्दी के समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है।

द्वितीय अध्याय :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सामाजिक मूल्य

'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' का संपादन, संकलन निश्‍चित रुप से भले ही मध्यकाल में हुआ तथापि भूत, वर्तमान एवं भविष्य की समस्त ज्वलंत समस्याओं का सुचारु रुप से समाधान एवं विश्‍व संस्कृति का आदर्श स्वरुप इसमें पूर्ण रुप से दृष्ट्य है। इसीलिए सामाजिक मूल्य-आपसी भाईचारा, शांति, एकता औरों के विचार एवं अभिव्यक्ति को समझने की क्षमता, समाज में शांति कायम रखते हुए 'जीओ और जीने दो' वाले सिद्धांत को स्थापित करने का श्रेय 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' को ही जाता है। 'विविधता में एकता' का साक्षात साक्षात्कार, मानवता को सर्वोच्य स्थान देनेवाले इस ग्रंथ को हम भावनात्मक एकता, पारंपारिक पारस्पारिक प्रेम तथा मानवता का साक्षी ग्रंथ कहे तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी। रुढीवादीता के संकीर्ण घेरों से मुक्त होकर जिस आदर्श समाज की परिकल्पना इस 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में की गई है, वह विश्‍व संस्कृति का दृष्टिकोण ही कही जा सकती है।

'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' मध्यकालीन संतों की अमूल्य बाणी का एक संपूर्ण संकलन है, जिसमें संग्रहकर्ता ने विग्रह एवं विधान के युग में व्यापक सार्वभौम दृष्टि के समान मंत्र

स्थापना की थी। युग बोध एवं भावी अंदेशों के साथ उसमें भावनात्मक एकता का सुत्र बांधकर संतों ने सांसारिक जीवों के लिए जीने के सही मूल्य आंकने का सफल प्रयास किया था। यही वजह है कि उनका काव्य मानवता के प्रति प्रेम, शुद्धिकरण एवं इश्वरेच्छा में विश्वास की भी परिचायक है। इन संतो ने युगानुकूल यथार्थ सत्य का चित्रण किया। भावनात्मक एकता के भी अनेक संदेश इस ग्रंथ साहिब में भरे पड़े हैं। वास्तविक रुप में तो 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' ऐसे अनेक अनमोल रत्नों से भरा हुआ महासागर है, जिसमें जितना नीचे गोता लगाया जाए उतने ही अनेकानेक प्रकार के मोती मिलते जाएँगे तथा मानव को और मोती (सुंदर वचन) प्राप्त करने की इच्छा मन में पैदा होती रहेगी। सर्वगुणों से संम्पन्न, सभी में व्याप्त रहते हुए भी सबसे परे 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' के ज्ञानरुपी रत्न पाने की लालसा ही मनुष्य को सभी अवगुणों से दूर रखती है।

तृतीय अध्याय :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अभिव्यक्त मानवता

संसार के अद्‌भुत, अद्वितीय, सर्वोत्तम, बाणी को गुरु की सर्वोच्च पदवी से सुशोभित करने वाले ग्रंथ 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की महानता, उच्चता व संपूर्णता अद्‌वितीय है। 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' के संपादन, संकलन और प्रकाश को अद्‌भुत, अलौकिक, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, ऐतिहासिक कार्य व घटना कहा जा सकता है। मानवतावाद का ऐसा जीवंत उदाहरण सराहणीय है। इसमें भेदभाव, ऊँच-नीच, कर्मकांड, दिखावा आदि का खंडन किया गया है। 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की विलक्षणता यह है कि इसमें न केवल धर्म निरपेक्षता का साक्षात्कार किया गया है अपितु संपूर्ण मानवतावाद को प्रत्यक्ष रुप से स्वीकारा गया है। अलग-अलग जाति, धर्म चाहे वह उच्च जाति के हो या, तत्कालीन समाज द्वारा जिन्हें ठुकराया गया हो, सभी की बाणी संकलित की गई है। संसार के अन्य धर्म ग्रंथों में उस धर्म के उपासकों को उपदेश दिए गए हैं तथा उसी धर्म से संबंधित

सिद्धांत बताए गए हैं। उस धर्म में तो वह ग्रंथ आदरणीय होता ही है मगर जब दूसरे धर्म-ग्रंथों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो पता चलता है कि वो ग्रंथ कितनी महानता रखता है। हर धर्म के ग्रंथों की अपनी अलग विशेषता है। इस संदर्भ में देखा जाए तो 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' का स्थान संसार के सभी धार्मिक ग्रंथो में अपनी अलग पहचान तथा महत्व रखता है। इसमें अनेक ऐसी विशेषताएँ हैं जो दूसरे ग्रथों में नही पाई जाती। 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस जगत का यह एक ही ऐसा ग्रंथ है जिसको गुरु की उपाधि दी गई है। संसार का कोई भी ऐसा ग्रंथ नहीं है जो अपने धर्म का गुरु हो। यह ग्रंथ भारत की सांस्कृतिक सांझ का भी प्रतीक स्तंभ है और यह अनेकता में एकता, अखंतडता को बढ़ावा देने वाला संरक्षक ग्रंथ है।

चतुर्थ अध्याय :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सांस्कृतिक मूल्य

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में मध्यकालीन महापुरुषों और संत महात्माओं की वाणी सम्मिलित है, जो उस समय की तत्कालीन स्थितियों से भलि-भांति परिचित थे। उन्होंने जन-सामान्य के बीच रहते हुए समाज की बिगडती व्यवस्था, मिथ्या कर्मकांड, दुर्दश को प्रत्यक्ष रुप में देखा था। मूल्यों के पतन और जातिगत पक्षपात, सामाजिक बुराईयों के वे साक्षी थे। इसीलिए उन्होंने जाति-पाति, धर्म की संकीर्ण सीमाओं से उँचे उठकर मानवता के चिरस्थाई मूल्यों की स्थापना की। तत्कालीन समाज में व्याप्त पाखंडो, आडंबरों पर प्रहार किया। सामाजिक स्तर पर बुरी परंपराओं और रूढ़ियों का कड़ा विरोध किया। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का जो ऱ्हास हो रहा था, मूल्यों में जो संकीर्णता आ रही थी उसे अपने वचनों तथा वाणी द्वारा प्रबल सहारा दिया। लोकनायक के रूप में जन-सामान्य को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। मनुष्य रूप में जन्म लेकर मानवता की सारी अच्छाइयों से परिपूर्ण मानव बनाने में वे सहभागी रहे।

पंचम अध्याय :- श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भाषा एवं शिल्प

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भाषा बोली संतभाषा है। वाणीकारों ने इस ग्रंथ में उस भाषा का प्रयोग किया जो उस समय सामान्य जन को समझ में आ सके। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भारत के विभिन्न प्रांतो में रहनेवाले भक्तों की महापुरूषों की वाणी संकलित है। यह स्वाभाविक ही था कि उस प्रांत की बोली, मुहावरों, भाषा का उन्होंने अपनी वाणी में प्रयोग किया। इसीलिए यह ग्रंथ अपभ्रंश, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, लहंदी, अरबी, फारसी का आदि भाषाओं का शब्द भंडार है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ३१ राग प्रयुक्त हुए है। इसमें संकलित बाणी रागों पर आधारित है। अतः सारी रचना ही संगीतात्मक है। अलंकारों, छंदों का बहुविध प्रयोग हुआ है। अलंकारों में अनुप्रास, रूपक, उपमा आदि प्रमुख अलंकार है। सामान्य छंदों में दुपदे, तिपदे, चौपदे, अष्टपदी तथा और विविध छंदों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं करहले, अल्हाणिया आरती, सोलहे, बारहमाह, सुखमणी को भी लिया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब साहित्य एवं संस्कृति की एक सर्वोत्त्कृष्ट कृति है। यह मध्ययुगीन भारतीय साहित्य का दर्पण है। निर्गुण काव्यधारा की सूक्ष्म उपधाराओं की विशेषताएँ इसमे दिखाई देती है।श्री गुरु ग्रंथ साहिब मध्यकालीन साहित्य की लोक परंपराओं का सामाजिक इतिहास भी है। साहित्यिक कृति के मूल्यांकन की दृष्टि से देखा जाए तो इस ग्रंथ में वे सारे तत्त्व दिखाई देते हैं जो उत्कृष्ट साहित्य में होने चाहिए। यह ग्रंथ एक आध्यामिक रचना है। इस कारण इसमे भाव एवं विचारों की प्रधानता आई है। भाषा एवं शैली भावानुकूल है। वाणीकारों के विचारों को मानव-मन तक पहुँचाने में सक्षम सिद्ध हुई है।

षष्ठम् अध्याय :- उपसंहार

'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' किसी एक देश, एक जाति अथवा एक संप्रदाय के लिए नहीं, प्रत्युत समस्त मानवता के लिए दिव्य संदेश है, प्रेरणास्त्रोत है। 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' मानवता के उच्चतम आदर्श का महान ग्रंथ है। आज के इन विषम तथा असामाजिक परिस्थितिओं में इस ग्रंथ में संग्रहित बाणी रुपी संदेश ही हमारे लिए प्रासंगिक है। इन संदेशों को अपने जीवन में उतारना और उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना हम सभी का परम कर्तव्य है। इस भावनात्मक एकता, मानवतावाद का सार तथा संदेश 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी' में हम इन शब्दों में पाते हैं -

"अवल अलाह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे।
एक नूर ते सब जग उपजिआ
कौन भले को मंदे।"

शोध - निर्देशक
डॉ. आर. एम. जाधव
प्रधानाचार्य, पीपल्स कॉलेज, नांदेड.

शोधछात्रा
राजींदर कौर स. हरमीत सिंघ
महाजन